सद्गुरु तत्व बोध

SADGURU TATV BODH

ubl fnYyh
vad & 111

Jh lkbl 'kdk 30
tuojh & 2012

Å¡

AA Jh lkbZukFkk; ue%AA

AA Jh lnx:ukFk nknk; ue%AA

Publisher
Sri Saikalp Adhyatm Sanstha
"Sai Niketan"
New Delhi - 110025
Ph. : 26956561
E.mail : saikalp@gmail.com
dadab6@gmail.com
Web : saishraddha-world.com

Patron
Lalita Bhavani Shankar Bhatte

Editorial
Vijay Kumar Varma
Jogesh Grover

Subscription
Inland
Yearly : Rs.250.00
Life time : Rs.1000.00

Overseas
Yearly : US$ 250.00
Life time : US$ 500.00

Printed By
Shaarp Advertising
Cell : 09810284136

Published Every Month

©All rights reserved with Publisher

x:cèk Hkfxfu;ks ls

"गुरूमार्ग में" भक्तों के लिये सर्वश्रेष्ठ साधना की प्राप्ति क्या होती है? ऐसा प्रश्न एक बार पं. पू. दादा जी ने भक्तो से पूछा था। या फिर इस गुरूमार्ग की खासियत क्या है? इस गुरूमार्ग की स्थापना होने से पहले लक्ष्मी और सरस्वती साथ साथ नहीं रहती थी; इसका अर्थ है कि पारमार्थिक विद्या प्राप्त करने के लिये बैरागी बनना आवश्यक था। बैरागी बनके कोई उपासना करना मतलब इस जगत में मानव की जो मूलभूत आवश्यकतायें होती है, अन्न–वस्त्र–निवारा, इनसे जब कोई भी साधक उपासना करते समय इन मूलभूत चीज़ों से (जरूरतों) वंछित होता था, यानी उसके मन की अवस्था में अन्न–वस्त्र–निवारा की आवश्यकता खतम होकर दुनिया को सुख–शांति–समाधान कैसे दे सकते है, जब यह विचार दृढ़ता से निश्चित हो जाता था तभी उसे पारमर्थिक विद्या की प्राप्ति के लिये संकल्प साधना गुरू आज्ञानुसार करनी होती थी यम, नियम के अनुसार। वं. दादा जी ने भी सिद्धता करते समय इसी अवस्था में जीवन व्यतीत किया जिसकी शुरूआत औंदुबर साधना से हुई।

आने वाले समय में इस प्रकार की साधना दुनिया के लिये करना, यह कोई भी मानव के लिए अत्यंत कठिन होगा, असम्भव होगा क्योंकि पुराने जमाने में वह समय था, जब लोग गीता (भागवत् गीता) के अनुसार आचरण करते थे और सोचते थे कि कर्म करो लेकिन फल की अपेक्षा मत करो। आज जो सामान्य मानव जीवन में दुःखी है, उसके लिये यह सोचना मुमकिन नहीं है। आज के मानव को तो फल पहले देखना है तभी वह कर्म करने के लिये तैय्यार होगा। और आने वाले समय में आदमी कहेगा कि, फल तो अभी चाहिये कर्म वगैरा तुम लोग ही करो।" इसलिये आज के समय से उस समय तक और उससे भी आगे जो पारमर्थिक कार्य ईश्वरी कृपाशीर्वाद से मध्यस्तों के द्वारा चलता रहे, जिससे पूरी दुनिया को, त्रिभुवन को गुरूशक्ति का लाभ आसानी से प्राप्त हो, ऐसा महान यह कार्य वं. दादा जी ने सिद्ध किया है।

इस कार्य में आनेवाला हर एक व्यक्ति मध्यस्त है; सिर्फ हमारे अज्ञान की वजह से और आदतों की वजह से इसका महत्व हम समझ नहीं पा रहे हैं। आज भी हम अपने ही ऐहिक और स्वेच्छिक विषयों में डूबे हुए है। इसीलिये वं. दादा जी ने एक शेर कहा था,

"मैंने दुनिया के लिये खुश खबरी लायी।
अब दूर हो जाओं अपने कबर से
लेकिन दुनिया ने कहा, "तुम दूर हो जाओ,
हम अच्छे है अपनी कबर में।"

मतलब वं. दादाजी ने ऐसी कृपा हमारी झोली में डाली है, कि अपने दोषों का आसानी से विमोचन होकर, सर्वश्रेष्ठ दीक्षा – "कारण दीक्षा" हमें प्राप्त हो, याने हम इतने जन्मों से जो ऋणानुबंधों से जकड़ा हुआ जीवन व्यतीत कर रहे हैं उन्हें बाहर निकालकर जन्म का मूलभूत कारण उदित हो जाये और फिर, उससे भी आगे जाकर महाकारण अवस्था में ईश्वर का कार्य हम कर सके। इसीलिये हाजी हजरत ख्वाजा कुतुबूद्दिन वं. **ख्तायार काकी बाबा** ने कहा था कि, "यह कार्य ऐसा है कि जो तुम्हारी परवरिश भी कर सकता है और **परवरदिगार** तक भी पहुँचा सकता है।" मतलब ईश्वर से हम मिलने जा सकते है, ऐसा इसका मायना नहीं है तो हम जैसे सामान्य मानवों की अवस्था को ईश्वरी अवस्था तक याने महाकारण अवस्था तक परवरदिगार तक यह कार्य आसानी से ले जा सकता है।

ऐसी प्राप्ति सामान्य मानव को प्राप्त हो इसलिये बैरागी बनके उपासना करने की आवश्यकता नहीं है, तो इस गुरूमार्ग से, गुरूशक्ति से अब हमें एक रूप होना आवश्यक है। गुरूशक्ति से एक रूप हो गये तो खुद के माध्यम का विकास होगा। गुरूमार्ग का लाभ लेना मतलब ऐहिक जीवन में लाभ होना, यह हमारी सोच बिल्कुल गलत है। **गुरूमार्ग में आना मतलब खुद के माध्यम का विकास कर उसके द्वारा दुनिया को लाभ होना यह अपेक्षित है और यही गुरू कार्य है।**

अगर हम अपने जीवन में पीछे मुड़कर देखें तो जो कुछ सुख–शांति–समाधान का लाभ हमें इस गुरूमार्ग में आकर हुआ या जो अच्छा बदलाव हममें हुआ उसके लिये हमने खुद तो कुछ भी प्रयास नहीं किया। यह स्थित्यंतर सिर्फ गुरूकृपा से ही हुआ है। लेकिन इसके आगे अगर खुद का विकास कर लेना है तो जीवन में निश्चिंतता लाना जरूरी है। किस चीज की निश्चिंतता? तो आहार, आचार, उच्चार और विचारों की निश्चिंतता। इसकी शुरूआत आहार निश्चित करने से करनी है; हफ्ते का टाईम टेबल बनाकर आहार निश्चित करना है। फिर आचार और उच्चार निश्चित करने के लिये परमार्थ प्रश्नावली है। विचारों की निश्चिंतता आहार निश्चित करने से आरम्भ होगी क्योंकि निश्चित किया हुआ आहार हमारी ईच्छा या वासना से बदल न जाये इसलिये निश्चित विचार आवश्यक है। फिर आचार और उच्चार निश्चित करते समय भी विचारों की निश्चिंतता बढ़ती जायेगी और फिर विचारों पर संयम लाना है, तब विकास शुरू हो गया और यह विकास आगे होने के लिये हर रोज ऊँकार साधना करने की निश्चिंतता अत्यंत आवश्यक है।

वं. दादा जी ने एक बार यह कहा था कि "जितनी तपःश्चर्या उन्हें पारमार्थिक साधन प्राप्त करने के लिये करनी पड़ी, उससे कई गुना अधिक तपःश्चर्या उन्हें उन साधनों को भक्तों के माध्यम से कार्यान्वित करने की सिद्धता करने के लिये करनी पड़ी। यह सिद्धता शक्तिपीठ और प्रतिमाओं में अधिष्ठित कर रखी है। गुरू दीक्षा, कारण दीक्षा इत्यादी एक पलभर की दुवा नहीं है, तो यह एक लम्बी ईश्वरी सिद्ध योजना है। दीक्षाएँ सिद्ध करके प्रदान की, या गुरूशक्ति भक्तों के माध्यम में प्रवाहित की लेकिन उसे कार्यन्वित होने के लिये उसकी धारणा होना आवश्यक है और इस धारणा के लिये निश्चित प्रयत्न करना हमारा कर्त्तव्य है। अगर हम ऐहिक चीजे माँगने जाये तो दुनिया के बाजारों में आसानी से मिलेगी लेकिन अगर खुद का देहिक और आत्मिक विकास करना है, तो उसकी प्राप्ति ईश्वर के पास से भी इतनी आसानी से नहीं हो सकती जितनी इस गुरूमार्ग से होगी। हमारे जैसे अविकसित माध्यमों को पारमार्थक उच्च साधनों का लाभ इस गुरूमार्ग के अलावा दुनिया की कोई भी ताकत इतनी आसानी से प्राप्त नहीं करा कर दे सकती। "यह अमूल्य साधन कैसे प्राप्त हो जिससे दुनिया का भला हो", इसकी भूख आज हमें लगनी चाहिये।

"यहाँ सौदा होता है, मोहब्बत का।
लो हमसे, दो दुनिया को।

यह विभुतियों का वचन है।

23 जनवरी को वं. दादाजी का जन्म दिन है। हमें क्या तोफा उनको देना है वं. दादाजी ने तो कहा था कि मुझे कुछ नहीं चाहिये, सिर्फ आपके हृदय में स्थान चाहिये। क्या हम आज हमारे गुरू के लिये वह स्थान बना रहे है ? उनको अपने माध्यम में बुलाने के लिये, क्या हम अपना माध्यम पवित्र, शुद्ध रख रहे हैं ? इसीलिये आहार, आचार, उच्चार, विचार और दैनंदीन ऊँकार साधना की निश्चिंतता हमें करनी है। श्री गुरू को हृदय में स्थान देना है मतलब गुरूशक्ति से एक रूप होना है। तभी वह गुरूशक्ति धारण होकर प्रवाहित होगी। प्रवाहित होने के लिये हमारे माध्यम का विकास और विकार रहित स्पर्श, वाणी और दृष्टि का होना आवश्यक है।

कौन कहता है कि जिस्त सजा है मुझको
एक उलझा हुआ किरदार मिला है मुझको

1. जिस्त – जिन्दगी
2. किरदार – चरित्र

इस नये साल में यह प्रयत्न हम करें, जिसकी कामयाबी सभी गुरूबंधू भगिनीयों को गुरू कृपाशीर्वाद से प्राप्त हो, जिससे, श्री गुरू उनका यह कार्य हम सभी के माध्यमों से सफल कर सके, यह वंदनीय दादा जी और परम् पूज्यनिय बाबा इनके चरणें में प्रार्थना।

वं. दादा जी ने एक जगह लिखा है कि मैं सुफियों के प्यार में काफी खुश था उसकी एक मिसाल इस प्रकार है :

"एक फकीर मक्का शरीफ में सड़क पर बैठा रहता" जो कि अल्ला इलाही का काम करने के लिये कोढ़ी का जन्म लेकर धरती पर आया और उनके पास से जो भी गुजरता उसके कपड़े खीच कर वह भीख मांगते और लोग उन्हे लातमार कर गुजर जाते ऐसा वह फकीर 25 साल तक सड़क पर करता रहा आखीर एक दिन **परवरदिगार** खुद आकर उनके सामने खड़ा हो गया और कहा चलो तुम्हारी तपस्या सफल हुई और अब तुम्हें दुनिया की तकलीफें दूर करने के लिये हिन्दुस्तान जाना है या अजमेर शरीफ। ऐसे है हमारे गरीब नवाज साहब अर्थात हाजी हजरत ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती साहब।

बस यह गुरूमार्ग भी इन कुर्बानियों पर सिद्ध है।

ना था कुच्छ खुदा था,
न होता कुच्छ तो खुदा होता।
डुबोया मुझको होने ने,
ना मैं होता तो क्या होता।

सब धर्म यह मानते हैं कि मानव सृष्टि की श्रेष्ठ कृति है।

और हिन्दु धर्म के अनुसार मनुष्य के जन्म व पुर्नजन्म का कारण है अपने मूल अस्तित्व को पहचानना व उसी ब्रह्म में विलीन हो जाना जिसका वह अंश है।

मनोवैज्ञानिक और Neurologist का कहना है कि कोई भी मनुष्य अपने मस्तिष्क का 6–8 प्रतिशत से ज्यादा अपने जीवनकाल में प्रयोग नहीं कर पाता।

क्षोथ के अनुसार Albert Einstein जैसे प्रखर Scientist ने भी मात्र 8 प्रतिशत का ही इस्तेमाल किया था।

स्वप्न सकारात्मक विचार, पिछले जन्मों की बातें, Past liferegression या कर्म का लेखा जोखा इन्ही बाकी अनछूयी परतों में छिपा होता है।

हमारा धर्म यह भी मानता है कि हमारा यह जन्म जिस परिवार व माता पिता के साथ निर्धारित होता है वह हमारे पिछले कर्मों व इस परिवार व वंश की कर्मभूमि के तालमेल पर ही निर्भर है।

इसके साथ गुरू के माध्यम से हमारे दुष्कर्मों का प्रभाव भी अत्यन्त निर्बल पड़ जाता है वह हमारी सोच गुरू वलय की शरण में निरंतर बदलती व विकसित होती रहती है।

दर्द के जज्बे को जरा समेट कर रखो।
खुशी के लम्हों को यही यादे गुदगुदयेगी
जो आहें समेट कर रखी हों
वही मुस्कुराहटों को इजाफा लगायेगी।

यही मुश्किले तो इजाफा दिखायेंगी
बैठे रहने से तो तबलीफें बढ़ती जायेगी।
इसी जरिये से ही तो मंजिले करीब आयेगी।

जनम जनम का सेवक

विनम्र निवेदन

अति हर्ष के साथ आप सभी गुरुबंधु एवं भगिनियों को सूचित किया जाता है कि मासिक पत्रिका "तत्व बोध" का आगामी अंक एवं अन्य सूचना वेबसाइट पर एवं मेल द्वारा प्रेषित की जाएगी।

अतः आप सभी गुरुबंधु एवं भगिनियों से अनुरोध है कि आप सभी अपना ई–मेल पता एवं अन्य जानकारी यथाशिघ्र निम्न पते पर प्रेषित करें :

Sri Saikalp Adhyatm Sanstha

"Sai Niketan"

5, Jasola Vihar, New Delhi - 110025 Telephone : 26956561

E-mail : saikalp@gmail.com dadab6@gmail.com

Please send your yearly subscriptions as early as possible